Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

A–151

B.A. (Part–I) (NC) Examination, 2023

HINDI LITERATURE

Paper - I

(प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. (i) 'मनहुँ कला ससिभान' में अभिव्यक्त पद्मावती के रूप वर्णन को अपने शब्दों में लिखिए।

   (ii) आदिकाल के प्रमुख कवि अमीर खुसरो का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(iii) कबीर ने पंडित किस व्यक्ति को माना है ?

(iv) तुलसी द्वारा रचित किन्हीं **तीन** काव्य-ग्रंथों के नाम लिखिए।

(v) मीरा के पदों की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए।

(vi) रहीम द्वारा रचित साहित्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(vii) हिन्दी साहित्य के किन्हीं **दो** इतिहासकारों व उनके द्वारा रचित ग्रंथों के नाम लिखिए।

(viii) आदिकालीन काव्य की **दो** प्रमुख प्रवृत्तियों का संक्षिप्त वर्णन लिखिए।

(ix) व्यंजना शब्द शक्ति को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

(x) श्लेष अलंकार की परिभाषा देते हुए इसे उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

खण्ड–ब

2. कुट्टिल केस सुदेस, पौह परिचियत पिक्क सद।

कमल-गंध वय संध, हंसगति चलत मंद मंद॥

सेत वस्त्र सोहै सरीर, नष स्वाति-बूँद जस।

भमर भँवरहि भुल्लहि, सुभाव मकरन्द बास रस॥

नैन निरषि सुष पाय सुक, यह सुदिन मूरति रचित।

उमा प्रसाद हर हेरियत, मिलहिं राज प्रथिराम जिय॥

3. गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस।

चल खुसरो घर आपने, साँझ भयी चहु देस॥

खुसरो दरिया प्रेम का, उल्टी वा की धार।

जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार॥

4. कबीर निज घर प्रेम का, मारग अगम अगाध।

सीस उतारि पग तलि धरै, तब निकट प्रेम का स्वाद॥

कमोदनी जलहर बसै, चन्दा बसे आका।

जो जाहि को भावना सो ताहि के पास॥

5. मुकुट बाँधि सब बैठे राजा। दर निसान नित जिन्हे के बाजा॥

रूपवंत, मनि दिपै लिलाटा। माथे छात, बैठे सब पाटा॥

मानहुँ कवँल सरोवर फूले। सभा क रूप देखि मन भूले॥

पान कपूर मेद कस्तूरी। सुगँध बास भरि रही अपूरी॥

माँझ ऊँच इंद्रासन साजा। गंध्रबसेन बैठ तँह राजा॥

6. मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।

जैसे उड़ि जहाज कौ पंछी पुनि जहाज पै आवै॥

कमल नैन कौ छाँड़ि महातम और देव को ध्यावै॥

परमगंग को छाँड़ि पियासो दुरमति कूप खनावै॥

जिन मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, क्यौं करील फल खावै॥

सूरदास, प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै॥

7. तनक हरि चितवौ जी मोरी ओर।

हम चितवत तुम चितवत नाहीं मन के बड़े कठोर।

मेरे आसा चितनि तुम्हारी और न दूजी ठौर।

तुमसे हमकूँ एक हो जी हम-सी लाख करोर॥

कब की ठाड़ी अरज करत हूँ अरज करत भै भोर।

मीरा के प्रभु हरि अबिनासी देस्यूँ प्राण अकोर॥

8. अमर बेलि बिनु मूल की, प्रतिपालत है ताहि।

रहिमन ऐसे प्रभुहिं तजि, खोजत फिरिए काहि॥

अमृत ऐसे वचन में, रहिमन रिस की गाँस।

जैसे मिसिरिहु में मिली, निरस बाँस की फाँस।

खण्ड–स

9. भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

10. सूरदास की भक्ति-भावना पर लेख लिखिए।

11. 'ढोला मारू रा दूध' के भावपक्ष और कलापक्ष को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

12. काव्य गुण किसे कहते हैं ? इसके भेदों का वर्णन कीजिए।